हर्षवर्धन के शासन प्रबन्ध एवं उसके उपलब्धियों का वर्णन करें।

हर्षवर्धन एक कुशल प्रशासक था। उसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। उसका शासन व्यवस्था गुप्तकाल के समान ही था। हर्षकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी ह्वेनसांग के वृतान्त, हर्षचरित्र तथा तात्कालिक अभिलेखों से मिलती है।

हर्षकालीन शासन व्यवस्था :-

राजा :-
शासन का प्रधान व्यक्ति राजा होता था, उसके द्वारा मंत्रीपरिषदों का गठन किया जाता था। इस काल के प्रमुख मंत्री अमात्य तथा प्रधानामात्य का उल्लेख किया गया है। ह्वेनसांग के अनुसार, राजा पर मंत्रीपरिषदों का शासन होता है।

राज्य का प्रशासन :-
इस काल में शासन का क्रम इस प्रकार था।
राज्य → प्रान्तों (भुक्ति) → विषय (जिलों) → पठकों (तहसील) तथा ग्राम। ग्राम प्रशासन की निम्नतम इकाई थी। जिसपर शासन के लिए अधिकारियों की नियुक्ति की गई थी। सभी प्रान्तों पर राजा का कठोर नियंत्रण था।

आय का स्रोत :-
इस काल में आय का प्रमुख स्रोत कर था। कर के तीन प्रकार थे। ह्वेनसांग के अनुसार, कर प्रणाली उदार थी और उसका भार लोगों पर

कम था। सभी लोगों को व्यवसाय करने की स्वतंत्रता थी।

न्याय व्यवस्था :-

हर्ष के शासनकाल में अपराधियों के लिए आजीवन कारावास, अंगभंग, मृत्यु दण्ड, देश निकाला आदि दण्डों का विधान था। पुलिस के अधिकारियों को दण्डिक व दण्डपाशिक कहा जाता था।

सेना :-

उसके पास एक विशाल सेना थी। जिसमें हाथी घुड़सवार, पैदल, रथ शामिल था। युद्धों में सामान्यतः तलवार, ढाल भाले, कवच, धनुष - बाण का प्रयोग किया जाता था।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ :-

धर्म का संरक्षण :-

हर्ष प्रारंभ में शिव तथा सूर्य का उपासक था। वह सभी धर्मों का सम्मान करता था। ह्वेन-सांग से मिलने के पश्चात् उसने बौद्ध धर्म के महायान शाखा को संरक्षण दिया। वह प्रत्येक पाँचवे वर्ष प्रयाग में धर्म सभा का आयोजन करता था। ह्वेनसांग ने छठीं सभा में भाग लिया। इस सभा में सभी धर्मावलम्बियों को दान दिया जाता था।

शिक्षा तथा साहित्य की उन्नति :-

हर्ष काल की सबसे बड़ी उपलब्धि शिक्षा तथा साहित्य की उन्नति थी। इस काल में शिक्षा तथा साहित्य को प्रधानता दी गई। उसने शिक्षा के प्रमुख केन्द्र नालंदा को विकसित किया। हर्ष स्वयं एक नाटककार था। उसने तीन नाटक रत्नावली, नागानंद और प्रियदर्शिका की रचना की। वह विद्वानों को राजाश्रय तथा सम्मान देता था।

निष्कर्ष :-

हर्षकालीन शासन व्यवस्था अत्यन्त उदार थी और जनता सुखी थी। उसने धर्म शिक्षा और साहित्य को प्रोत्साहन दिया। वह एक लोकोपकारी शासक था। उसके शासनकाल में आम लोगों में भी शिक्षा का महत्व बढ़ा।